जमनालाल बजाज का ग्रामीण विकास में योगदान का अध्ययन

रामा देवी, शोधार्थी, राजनीति विज्ञान विभाग, सनराइज विश्वविद्यालय, अलवर, राजस्थान

प्रस्तावनाः– प्राचीन भारत में ग्रामीण अर्थव्यवस्था कृषि और कुटीर उद्योगों पर आधारित थी। मुगलों के आगमन और भारत विजय के पूर्व इस देश की सम्पत्ति का वितरण देश वासियों में व्यापक आधार पर होता था। सिकन्दर के समय भारतीय उत्पादन की गुणवत्ता तथा सम्पत्ति का यश समूचे यूरोप में फैला हुआ था। भारत की खोज करने वाले जहाजी बेड़े इस सम्पत्ति को प्राप्त करने के लिये अभियान चलाते थे। भारत आज भी बहुत समृद्ध देश माना जाता है लेकिन भारत देश के निवासियों की गणना दुनियाँ के गरीब लोगों में की जाती है। भारतीय ग्रामीण समाज में एक किसान और उसके परिवार को बेकारी के दिनों का सामना करना पड़ता है।

ग्राम स्वराज्य एक ऐसा पूर्ण प्रजातंत्र हो जिसमें हमारी बुनियादी जरूरते स्वावलम्वन के आधार पर पूरी की जा सकती है और अन्न, वस्त्र के लिये दूसरो पर निर्भर न रहना पड़े। प्रत्येक गाँव में एक पाठशाला, सभा भवन, प्राथमिक चिकित्सालय, नाटकशाला, सभी के लिये स्वच्छ जल, बुनियादी तालीम आदि की व्यवस्था आवश्यक है। गाँव के सभी कार्य सहयोग के आधार पर किये जाये। ग्राम समाज में जाति–पाँति और अस्पृश्यता जैसे भेद बिल्कुल न रहे, हमारे गाँव में स्वच्छता की पूरी व्यवस्था रहे। कुटीर उद्योगो की स्थापना की जाये ताकि हर एक को अपने जीवन निर्वाह के लिये रोजगार मिल सके भारत अपने चंद शहरों में नही बल्कि गाँव में बसता है जब तक हमारे गाँव का समग्र दृष्टि से समुचित विकास नही होगा तब तक भारत का विकास हो पाना असम्भव है।

जमनालाल बजाज जी ने महात्मा गाँधी के खादी प्रचार प्रसार से लेकर ग्रामीण आंचल के विकास में सहयोगी के रूप में कार्य किया उनके बतलाये हुये मार्गो पर चलकर जमनालाल जी ने ग्रामीण परिवेश के विकास के लिये विशेष आर्थिक सहयोग भी प्रदान किया।

साहित्यिक पुनर्विलोकनः– पुस्तक आधुनिक भारत के निर्माता जमनालाल बजाज रचित श्रीमन्नारायण, सूचना प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली, वर्ष फरवरी 1976 में जमनानलाल जी द्वारा ग्रामीण पृष्ठभूमि के निवासियों के लिये उनके द्वारा किये गये प्रयासों जिसके अन्तर्गत अस्पृश्यता निर्वारण, कुँओं का जीर्णोद्वार, खादी सेवा, मन्दिर प्रवेश, शिक्षा उत्थान आदि का अध्ययन किया।

पुस्तक भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन एवं संवैधानिक विकास लेखक डॉ0 वीरकेश्वर प्रसाद सिंह, ज्ञानदा प्रकाशन, नई दिल्ली, वर्ष 2003 में सन् 1857 से लेकर 1947, आजादी तक राष्ट्रीय आन्दोलन के अन्तर्गत ग्रामीण परिवेश के लिये शासन एवं प्रशासन द्वारा किये गये प्रयासों का अध्ययन किया।

पुस्तकों के साथ–साथ कई पत्र पत्रिकाओं का अध्ययन भी इस शोध पत्र के लिखने में अवलोकित किया गया है।

A Journal of Asia for Democracy and Development, A Quarterly Journal of Social Sciences, vol. XVIII(1-2) 2018, ISSN 0973-3833, Morena (M.P.) में ग्रामीण भारत में रोजगार के अवसर, वर्तमान राष्ट्रीय परिदृश्य समस्याऐं और समाधान, भारत में सार्वजनिक वितरण प्रणाली आदि शीर्षको का अध्ययन किया।

मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान की शोध पत्रिका, रजि0 नं0– 1151/2008–09 वर्ष–एक, अंक– प्रवेशांक, प्रकाशन योगेश्वर कृष्णा शिक्षा समिति, ए0के0 कॉलेज शिकोहाबाद में युवाओं में मादक द्रव्य व्यसन एक सामाजिक अभिशाप और वैश्वीकरण भारत की समस्याऐं एवं चुनौतियों का अध्ययन किया।

जर्नल समाज विज्ञान शोध पत्रिका, A Half Yearly Research Jounal of Social Sciences, Vol. V No.1, April-Sep (2007), Meerut (U.P.) में पंचायतीराज अतीत से वर्तमान तक और सुशासन एक सैद्धांतिक अवधारणा का अध्ययन किया।

शोध विधिः– शोध पत्र लिखने हेतु विभिन्न विधियाँ प्रयोग की गई है। ग्रामीण विकास की जानकारियों एवं आंकड़ों का संग्रहण, जमनालाल बजाज जी की पुस्तकों का संकलन, शोध पत्रों का, पत्रिकाओं का, जर्नल्स का अध्ययन एवं शासन और प्रशासन द्वारा चलाई जा रही ग्रामीण परिवेश के लिये नीतियों एवं कानूनों का अध्ययन विवरणात्मक, विशलेष्णात्मक, विवेचनात्मक आदि विधियों का प्रयोग किया गया है।

किसी भी समाज के निम्न आर्थिक (गरीब) वर्ग के लोागें के बेहतर सामाजिक जीवन यापन के उपायों पर चर्चा करना समाजशास्त्रियों का पेशा ही नहीं वरन् नैतिक उत्तरदायित्व भी है।[1]

राजनीतिक दल गाँव के मतों को और उनका समर्थन तो चाहते है एवं गरीबी, अन्याय मिटाने का जाप भी करते है लेकिन काम के सम्बन्ध में शासन और प्रशासन की तरफ देखते है। पश्चिमी देशों में सम्पत्ति का निर्धारण उनके पूँजीगत साधनों, रूपये–पैसे से होने वाली आमदनी, बैंक खातो के सहारे चलने वाले लेनदेन और जीवनोपयोगी वस्तुओ के मूल्यों के आधार पर किया जाता है लेकिन भारत में परिस्थितियाँ अलग है आवश्यक आँकडें ही यहाँ प्राप्त नही होते है भारत में प्राकृतिक सुविधाओं के बावजूद इस तथ्य से इनकार नहीं किया

जा सकता कि देश भर में गरीबी फैली हुई है। शहरों के मुकाबले गाँव के जीवन में अधिक उतार–चढ़ाव देखने को मिलता है। देहातों में देश की अधिकतम आवादी निवास करती है जहाँ दूर–दूर तक यातायात की सुविधाऐं उपलब्ध नही है। भारत मे व्यक्ति की औसत आयु दुनियाँ के अधिकतर देशों के मुकाबले कम है और यह निरन्तर घटती जा रही है। कर्जो के बोझ से ग्रामीण समाज दबा हुआ है और महाजनी सूद की दरें भयभीत करने वाली है। चाँदी और सोने जैसी धातुओं का बहुत बड़ी मात्रा में आयात होता है लेकिन इन्हें जमीन के नीचे दबा दिया जाता है इन्हें व्यापार को बढ़ाने के काम में नही लगाते। प्रति व्यक्ति वार्षिक आय भारत के ग्रामीण परिवेश में बहुत ही कम है।

ग्रामीण समाज को वर्ष में 6 महीने से अधिक बेकारी की समस्या भुगतनी पड़ती है। समाज गरीबी के बोझ से दबा हुआ है और उसके कारणों को समाप्त करने के लिये किसी न किसी समाधान की आवश्यकता है। भारत के मुख्य कुठिर उद्योगों के निरन्तर अवसान होने और उनके स्थान पर नये उद्योगो के उपलब्ध न होने से खेतिहर लोगों के उत्तरोत्तर कंगाल होते जाने और छोटी जोत की जमीनों में नये यत्रों और बेहतर साधनों का प्रयोग न कर पाने के लिये किसान मजबूर होते है जिसके फलस्वरूप खाद्यानों की कीमतो में बढ़ोत्तरी तथा अन्य कार्इियों के कारण देहात में गरीबी और बेरोजगारी की समस्या का विस्तार होता जाता है। भारत के ग्रामीण क्षेत्र के किसानों की गरीबी और मजदूरों की खस्ता हाली के बारे में किसी भी भारतीय नेता या कार्यकर्ता को बहारी विशेषज्ञो से जानकारी हासिल करने की जरूरत नही है जब तक इन ग्रामीण लोगों की आर्थिक हालत नही सुधरेगी तब तक विकास नहीं हो सकेगा। राजनीतिक दलों को देश की गरीब जनता के हितो को सामने रखकर ही योजना एवं कार्यक्रम चलाने चाहिये। जड़ की रक्षा करने और उसे मजबूत करने से ही पेड़ की रक्षा हो सकती है उसी प्रकार गाँव एवं ग्रामीण जनता का विकास करके ही देश को अधिक समृद्ध एवं खुशहाल बनाया जा सकता है।

गाँधी जी ने स्वंय कहा था भारत भूमि एक दिन स्वर्ण भूमि कहलाती थी इसलिये कि भारतवासी स्वर्ण रूप थे। भूमि तो वही है पर आदमी बदल गये है इसलिये यह भूमि उजड सी गयी है इसे पुनः स्वर्ण बनाने के लिये हमे सदगुणों द्वारा स्वर्ण रूप बनना है। हमें स्वर्ण बनाने वाला पारसमणि दो अक्षरो में अन्तर्निहित है और वह है– सत्य।

गाँव तक पहुँचने वाले धन को बीच में ही नेता, अधिकारी, कर्मचारी, एवं अन्य जिम्मेदार व्यक्ति भ्रष्टाचार की भेंट में चढा देते है अगर शासन एवं प्रशासन पूर्ण जिम्मेदारी और ईमानदारी से अपने कर्तव्य निभाये तो अवश्य ही ग्रामीण समाज का उत्थान होगा। गाँव को उनका उचित स्थान देना होगा यदि गाँव का नाश होता है तो भारत का भी नाश हो जायेगा उस हालत में भारत, भारत नही रहेगा। अपनी जरूरतों को परस्पर सहयोग से पूरा करना है। देहात वालों में ऐसी कला और कारीगरी का विकास होना चाहिये जिससे वे रोजगार प्राप्त हो सके। आज हमारे देहात उजड़े हुये और कूड़े कचरे के ढेर बने हुये है। ग्राम की पुनर्रचना का काम आज से ही शुरू हो जाना चाहिये और गाँव की पुनर्रचना का काम, काम चलाऊ नहीं वल्कि स्थायी होना चाहिये।[2]

गाँधी जी के शब्दों में गाँव की निश्चित रूप से स्वावलम्बी बनना चाहिये।[3] गाँव में जान तभी आ सकती है जब वहाँ लुट–फुट रूक जाये। ग्रामीण समाज की बुरी हालत का कारण यह भी है कि जिन्हे शिक्षा का सौभाग्य प्राप्त हुआ है उन्होने गाँव की बहुत उपेक्षा की है। सरकारी सेवा के कर्मचारी, अधिकारी, डॉक्टर आदि को कठिनाईयों से घबराकर कभी अपना रास्ता नही छोड़ना चाहिये। गाँव अधिक साफ सुथरा बनाकर और अपनी योग्यतानुसार गाँव की निरक्षरता दूर करके हर व्यक्ति इसकी शुरूआत कर सकता है और अगर उनके जीवन साफ और परिश्रमी हो तो इसमें कोई शक नही कि जिन गाँव में वे काम कर रहे होगें तो उन गाँव वाले भी साफ और परिश्रमी बनेगें। आज अपने प्राक्रमी देश को आवश्यकता है शोषण को जड़ से उखाड फेकने की, आपसी भेदभाव को भुलाकर कन्धे से कन्धा मिलाकर चलने की आवश्यकता है।

शराब की लत एक बीमारी है। शराब की आदत मनुष्य की आत्मा का नाश कर देती है और धीरे–धीरे पशु बना डालती है जो पत्नी, माँ और बहन में भेद करना भुला देती है। शराब और अन्य द्रव्यों से कई प्रकार की बीमारियाँ जकड़ लेती है।[4]

व्यक्ति को मानसिक गुलामी से मुक्त होकर अपने शरीर को और आत्मा को पवित्र बनाना चाहिए। ग्रामीण समाज की गरीबी के मूख्य कारणों में अशिक्षा, अस्पृश्यता आदि है जो बुरी आदतों के शिकार है वे स्वभाव से बुरें नहीं है वे उनमें लाचारी से बिना सोचे समझे फँस जाते हैं उन्हें समझना चाहिए कि कठोर अनुशासन द्वारा नियमित जीवन ही उन्हें और राष्ट्र को सम्पूर्ण विनाश से बचा सकते है। यदि हमारा मन मलिन हो तो हम भगवान का प्रेम सम्पादित नही कर सकते, उसी तरह हमारा शरीर और आसपास का वातावरण मलिन होगा तो हम निरोगी कैसे बन पाऐंगे।

हमारी आवादी बढ़ती ही जा रही है और उसके साथ किसान की व्यक्तिगत जमीन कम होती जा रही है नतीजा यह हुआ कि प्रत्येक किसान को जितनी चाहिए उतनी जमीन नहीं है आज हिन्दुस्तान की यही हालात है। धर्म, दया या नीति की परवाह न करने वाला अर्थशास्त्र तो पुकार–पुकार कर कहता है कि आज हिंदुस्तान में लाखों पशु मनुष्य को खा रहे है क्योंकि उनसे कुछ लाभ ना पहुँचने पर भी उन्हें खिलाना तो पड़ता ही है इसलिए उन्हें मार डालना चाहिए लेकिन धर्म कहो, नीति कहो या दया कहो ये हमें इन निकम्मे पशुओं को मारने से रोकते है।

ग्रामीण सुव्यवस्था एवं जीवन यापन हेतु प्रमुख बिंदुओं पर कार्य करने की अति आवश्यकता है–

(1) अनाथालय की स्थापना।

(2) प्राथमिक चिकित्सालय की स्थापना एवं दवा वितरण की मजबूत प्रणाली।

(3) विश्रामालय का निर्माण जिससे शादी एवं अन्य कार्यक्रमों में उसका उपयोग किया जा सके।

(4) शौचालय का निर्माण जिससे व्यक्ति स्वस्थ एवं स्वच्छ जीवनयापन कर सकें।

(5) विद्यालयों की स्थापना, कम्प्यूटर केन्द्रों की स्थापना आदि।

(6) रोजगार हेतु कुटीर उद्योगों का अधिकाधिक प्रयोग।

(7) स्वच्छ जल पेय आपूर्ति, सिंचाई व्यवस्था आदि।

जमनालाल बजाज ने जाति धर्म आदि किसी भी प्रकार के भेद न रखते हुये मनुष्य मात्र की सेवा की। देहात के लोगों सें उन्होंने कभी दूरी बनाकर नही रखी थी वे तो गरीबों एवं असहायों की मदद किया करते थे उनके इस आचरण को तुलसीदास के दोहे से ही समझा जा सकता है–

"परहित बस जिनके मन माँही, तिन कहँ जग दुर्लभ कछु नाही।"

वे एक महान कर्मयोगी थे, उन्होंने अपने जीवन को कुछ मूल मंत्रों को समर्पित कर रखा था वे अक्सर कहा करते थे मुझे विश्वास है कि सार्वजनिक कल्याण के लिए ही सेवा करते रहने से मोक्ष प्राप्त होता है। उन्होंने गाँव–गाँव तक पहुँचकर जनता को कार्यरत रहने के लिए उत्साहित किया। आप स्वंय किसी छोटे से छोटे कार्य को हीन एवं तुच्छ नहीं समझते थे। जमनालाल बजाज की अर्धांगिनी जानकी देवी बजाज ने भी देहात सेवा में उनका सहयोग किया। ग्राम सेवा मंडल, नालवाड़ी वर्धा के लिए दान में उन्होंने 19,500/–रू0 दिये। सेवा ग्राम में विश्राम गृह कि स्थापना हेतु जमनालाल बजाज ने 10,000/– रूपये दान स्वरूप दिये।

ग्राम सेवा संघ, वारडोली में वे ट्रस्टी के रूप में कार्यरत रहे थे। खादी के कार्यों के संबंध में जमनालाल बजाज की निष्ठा अत्यंत गहरी थी। वे कहा करते थे कि खादी भूखे को रोटी, अंधे को लाठी और विधवा को सहारा है। भारतवर्ष तो गरीब, किसानों और मजदूरों का देश है जब तक इन लोगों की आर्थिक हालत न सुधरे और इनका संगठन न हो, तब तक हमें सफलता मिली नहीं कही जा सकती। इनकी स्थिति सुधारने का और संगठन का सबसे अच्छा साधन खादी है। खादी के काम को इस प्रकार से ही पूर्ण किया जा सकता है –

(1) **यज्ञ भावनाः–** देश की गरीब जनता का ख्याल रखकर उसके प्रति हमदर्दी तथा समान भाव की दृष्टि से सूत काटना ।

(2) **स्वावलम्बनः–** फुरसत के समय में सूत कातना और अपनी वस्त्र सम्बन्धी आवश्यकताओं की पूर्ति करना।

(3) **व्यापारः–** देहातों में मजदूरी देकर, सूत कटवाकर तथा बुनबाकर खादी उत्पादन करना और बेंचना।

जमनालाल जी जब कभी खादी अथवा ग्राम विकास के किसी काम से गाँव में जाते तो हर व्यक्ति के साथ मानवीय धरातल पर व्यवहार कर सकना उनके खून में था। अखिल भारतीय ग्रामोद्योग संघ के कोषाध्यक्ष के रूप में खादी को राष्ट्रीय जीवन मे लोकप्रिय और प्रचारित करने के लिये उन्होनें अथक प्रयत्न किया था।[5]

1942 के प्रारम्भ में जमनालाल बजाज जी ने एक अखिल भारतीय गो सेवा सम्मेलन का आयोजन किया जिसमें देशभर से इस विषय के विद्वान एकत्रित हुये। विनोबा भावे ने सम्मेलन की अध्यक्षता की और महात्मा गाँधी जी ने इसका उद्घाटन किया।[6]

महात्मा गाँधी जी ने गाय को 'करूणा की कविता' कहा और उसकी सेवा तथा रक्षा पर उनका बड़ा जोर था।[7] अगर गाय मरती है तो हमारी संस्कृति भी मर जायेगी मेरा मतलब है कि हमारी अहिंसक ग्राम सभ्यता।

महात्मा गाँधी ने जमनालाल बजाज एवं अन्य को सम्बोधित करते हुये हरिजन साप्ताहिक पत्र में 'वास्तविक युद्ध प्रयत्न' शीर्षक के अन्तर्गत लिखा कि आज की सबसे बड़ी जरूरत भूखो को भोजन और नंगों को कपड़ा देना है। हरेक कार्यकर्ता के सामने यह बहुत बड़ा काम पड़ा हुआ है जो संगठन इन दो समस्याओं को सफलतापूर्वक हल करेगा वह लोगों का प्रेम और विश्वास प्राप्त करेगा। मैं आशा करता हूँ कि इस वास्तविक युद्ध प्रयत्न में सब हिस्सा बंटायेगें। यह काम शांतिपूर्ण और रचनात्मक है इसलिये कम प्रभावशाली नही रह जाता।[8]

शोध पत्र के अध्ययन का उद्देश्य एवं महत्वः– किसी देश की आर्थिक एवं सामाजिक उन्नति ही उसे सशाक्त और विकसित बनाती है जहाँ विकास की आवश्यकता होती है वहाँ अवरोध भी होते है अर्थात् विकास के पथ पर अनेक समस्याऐं होना स्वाभाविक हैं। इन समस्याओं का

समाधान कर ही विकास की अवस्था पर पहुँचा जा सकता है। वर्तमान राष्ट्रीय परिदृशय को केन्द्र में रखकर ही ग्रामीण परिवेश की समस्या को भलीभांति समझा जा सकता है और इनका समाधान खोजा जा सकता है। सरकार और संस्थाओं पर मात्र दोषारोपण से ही ग्रामीण स्थिति में सुधार नही हो सकेगा। अपनी चुनौतियों का मुकाबला एवं अपने हालात सुधारने के लिये स्वंय आगे आना होगा। चेतना, शिक्षा, स्वाबलम्बन, आत्म विश्वास, एकता आवश्यक है। आवश्यकता इस बात की भी है कि व्यक्तियों को परस्पर समन्वय और सहयोग के महत्व को समझते हुये आगे बढ़ने तथा परिवार, समाज एवं देश को प्रतिष्ठित करना चाहिये।

निष्कर्ष :– भारत के ग्रामीण क्षेत्रों में आजीविका निर्वहन के लिये प्राचीन समय से ही कार्य किया जाता रहा है। ब्रिटिश सरकार एवं वर्तमान में भारत सरकार द्वारा ग्रामीण आंचल के लिये बहुत कार्यक्रम एवं योजनाऐं चलायी जा रही है जिसके परिणामतः गॉव की स्थिति में परिवर्तन दिखाई दे रहा है। ग्राम समाजिक एवं आर्थिक परिर्वतन, ग्रामीण समस्याओं का निराकरण, सड़कों का निर्माण, रोजगार के अवसर, तकनीकी प्रचार– प्रसार, लघु व्यवसाय का विकास, शिक्षा, स्वच्छता, स्वास्थ्य सुविधायें एवं संचार साधनों का विकास हुआ है। परिवहन के साधन तीव्रता के साथ उपलब्ध होना ग्रामीण परिवेश के विकास का परिचायक है। आधुनिक तकनीकी के माध्यम से किसानों को खेती से जुड़ी नवीनतम सूचनाऐं एवं मशीनें सरलता से प्राप्त हो जाती है। सरकार द्वारा किसानों के हित के लिये के0सी0सी0, किसान सम्मान निधि आदि योजनाओं का संचालन किया जा रहा है। जमनालाल जी ने अस्पृश्यता निवारण के लिये बड़ी हिम्मत से कार्य किया। विभिन्न रचनात्मक कार्यक्रम को बढ़ावा देने के लिये जमनालाल जी ने देशभर के ग्रामीण क्षेत्र में यात्राऐं की। सामाजिक सुधार, हरिजन उद्धार, शिक्षा की अलख जगाने, खादी प्रचार– प्रसार एवं गौ सेवा आदि के लिये विशेष प्रयत्न किये। उनका खादी और ग्रामोद्योग में बहुत विश्वास था वे इसे पवित्र से पवित्र धर्म एवं कर्म मानते थे।

सन्दर्भ सूची:–

1. राम आहूजा, भारतीय सामाजिक व्यवस्था, रावत पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 1955
2. मोहनदास कर्मचन्द गॉधी, हरिजन सेवक, 10.11.1946
3. महात्मा गॉधी, हरिजन (अंग्रेजी साप्ताहिक) पत्रिका, 28.01.1939
4. मो0 क0 गाँधी, मेरे सपनों का भारत (संक्षिप्त), सिद्धराज ढड्ढा (सम्पादक), सर्व सेवा संघ प्रकाशन, वाराणसी, 1969, P.84.
5. श्रीमन्नारायण, आधुनिक भारत के निर्माता जमनालाल बजाज, सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली, फरवरी 1976, पृष्ठ– 185
6. श्रीमन्नारायण, उपरोक्त, पृष्ठ– 243
7. महात्मा गॉधी, यंग इण्डिया, 6.10.1921
8. महात्मा गॉधी, हरिजन, 25.01.1942